

हमारी कला का परचम दुनिया भर में लहराएंगा

सैयद हैदर रजा देश के उन बड़े कलाकारों में से एक हैं जिनकी पेंटिंग्स पूरी दुनिया में सराही जाती हैं। 92 साल की उम्र में भी उनकी होसला देखने लायक हैं। आज भी पूरी सक्रियता के साथ वह अपने काम में लगे रहते हैं। कई पुस्तकों से सम्मानित यह कलाकार सत्य को पहचान करते हुए वे पंचतत्व पर काम करना चाहते हैं क्योंकि इन तत्वों से ही यह संसार बना है। प्रस्तुत है उनसे संघ्या रानी की बातचीत :

भारत लौटने का विचार आपने कैसे बनाया ?

फ्रांस में 60-70 साल रहने के बावजूद अपने वतन को मैं एक पल के लिए भी नहीं भूला। हर साल मैं कुछ समय के लिए भारत जरूर आता था। मैं वहाँ बहुत महत्वपूर्ण काम कर रहा था। उसे हर हाल में पूरा करना था। यह भी देखना था कि विश्व कला क्या है और भारतीय कला को क्या होना चाहिए। ये काम पूरा करने में समय लग गया। इसके अलावा वहाँ पर एक बहुत ही खूबसूरत लड़की मिल गई। वह चित्रकार थी। उससे मेरा विवाह हो गया। वह अपने परिवार को इकलौती लड़की थी। उनकी मां ने कहा- बेटा मेरी एक ही बेटी है। तुम यहीं रहो। उनको दुख न पहुँचे, इसलिए 15-16 साल वहाँ ज्यादा रुकना पड़ा। दुर्भाग्यवश उनका देहांत 2002 में हो गया। वहाँ स्मिथसोन और इटैलैन्सअल लिलेशन के अलावा कुछ नहीं था। मेरी कोई संतान भी नहीं थी। मैंने सोचा कि अब अपने देश लौटना चाहिए। उनके मरने के आठ साल के बाद 2010 में मैं भारत लौटा।

कैसी रही वापसी ? अब तो आप यहीं रम गए हैं...

मेरा लौटना बहुत रचनात्मक और फायदेमंद रहा। हालाँकि मेरी यह उम्र और बदली हुई स्थितियाँ कभी-कभी मुश्किल भी खड़ी करती हैं, फिर भी मैं यहाँ आकर बहुत खुश हूँ। भारत एक महान देश है। अब मैं यहाँ जम-गया हूँ।

रजा फाउंडेशन स्थापित करने के पीछे असल मकसद क्या है ?

चित्रकार एम एफ हुसैन, तैयब मेहता और सूजा ने जो काम किया है, वह बेहतरीन है। और भी बहुत से चित्रकार हैं जो अच्छा काम कर रहे हैं। उनमें से कुछ चित्रकार यह जानते हैं कि उन्हें किस दिशा में जाना चाहिए, पर कुछ चित्रकार ऐसे हैं जो कल्पनजन्य में हैं कि क्या करें। जब कभी युवा चित्रकारों से मिलने का मौका आता है तो बाचीत करने के लिए समय बहुत कम मिलता है। एक दिन मैंने सोचा कि क्यों न एक ऐसी



ससाह का इंटरव्यू

सैयद हैदर रजा

संस्था बनाई जाए, जहाँ कला के सभी विधा के लोग एक साथ मिलकर संस्कृति के बारे में सोचें। उसी दरम्यान यह आइडिया आया और रजा फाउंडेशन बना। हालाँकि मैं अपना नाम नहीं देना चाहता था, लेकिन सभी ने कहा कि आपको अपना नाम देना चाहिए। इससे अच्छा प्रभाव पड़ेगा।

दिल्ली में समकालीन कलाओं का संग्रहालय भी तो आप बनाना चाहते हैं...

मैं नहीं बना रहा हूँ। फाउंडेशन बना रहा है। भारत में सांस्कृतिक जागरूति है। नृत्य, संगीत, लेखन, कविता और चित्रकारी में बहुत काम हो सकता है। मेरी इच्छा है कि इस दिशा में कला की सभी विधाओं से जुड़े हुए युवाओं को सही मार्ग दिखाए ताकि वे रचनात्मक दिशा में आगे बढ़ सकें।

भारतीय कलाकारों में आप किन्हें पसंद करते हैं ?

कई चित्रकार हैं जिनमें मैं खूब पसंद करता हूँ। वे सभी हमारे पीढ़ी के चित्रकार हैं। जैसे तैयब मेहता, अमृता शेरगिल, गायत्रीदे, राम कुमार, अकबर पदमसी और कुण्डा खन्ना। कुछ युवा चित्रकार भी हैं, जिनको मैं पसंद करता हूँ, जैसे संजीव भोसले, सुजाता बजाज।



कुछ चित्रकार यह जानते हैं कि उन्हें किस दिशा में जाना चाहिए, पर कुछ ऐसे हैं जो कल्पनजन्य में हैं कि क्या करें। एक दिन मैंने सोचा कि ऐसी संस्था बनाई जाए, जहाँ कला की सभी विधाओं के लोग मिलकर संस्कृति के बारे में सोचें। उसी दरम्यान यह आइडिया आया और रजा फाउंडेशन बना।

नई पेंटिंग्स में किन विषयों पर काम करना चाहते हैं ?

मैं पंचतत्व पर काम करना चाहता हूँ। बचपन से ही शिक्षकों ने जो मार्ग मुझे दिखाया है, उसी पर 60-70 साल से काम कर रहा हूँ। अब भी उसी पर काम करना चाहता हूँ, क्योंकि पंचतत्व से ही संसार बना है। इसलिए सत्य कहाँ छुपा है, उसकी खोज करनी चाहिए।

आपकी कलाकृतियों में बिंदुओं को गहरे आकर्षक रंगों में रखा गया है। क्या इसका कोई गहरा आध्यात्मिक महत्व है ?

हाँ। जैसे हम बिंदु को आत्मा समझकर रंगों के माध्यम से पहचानते हैं, उसी तरह रंगों के माध्यम से आत्मा की ओर जाते हैं। रंगों को समझकर ही उपयोग करना चाहिए, क्योंकि उसके माध्यम से हम आत्मा की ओर बढ़ सकते हैं। अगर चित्रकार इस चीज को नहीं समझता तो वह आत्मा की ओर नहीं जा सकता।

भारत में कला, कलाकार की स्थिति और भारतीय कला के भविष्य पर क्या कहेंगे आप ?

इन दिनों महत्वपूर्ण और सामान्य, दोनों तरह का काम चल रहा है। जहाँ अच्छा काम होता है वहाँ मुझे बहुत खुशी होती है और जहाँ बेकार होता है, ठीक नहीं लगता। अपनी समझ से हर किसी की निर्णय करना चाहिए कि चित्रकार अपना काम ठीक से कर रहे हैं या नहीं। आधुनिक भारतीय कला का भविष्य बहुत ही उज्जवल है। मुझे पूरा यकीन है कि देश में ही नहीं, बल्कि दुनिया भर में आधुनिक भारतीय कला का परचम लहराएगा।